हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश

"वानिकी अनुसंधान, सतत वन प्रबंधन एवं आजीविका" विषय पर एक दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन

वर्तमान में प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन, जनसंख्या वृद्धि के साथ लोगों की बढ़ती जरूरतों एवं सिमित संसाधनों के मध्यनजर जागरूकता हेतु हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, शिमला के वित्तीय सौजन्य से **"वानिकी अनुसंधान, सतत वन प्रबंधन तथा आजीविका"** विषय पर दिनांक 17 मार्च, 2021 को एक दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में विभिन्न सरकारी संस्थाओं के संस्थानों, विश्वविद्यालयों, गैर सरकारी संस्थाओं, वन विभाग एवं पंचायतों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । कार्यशाला में 42 प्रतिभागियों ने शारीरिक रूप से तथा 176 प्रतिभागियों ने वर्चुअल माध्यम से भागीदारी की ।

डॉ. सविता, प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं वन बल प्रमुख, हिमाचल प्रदेश ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यशाला का शुभारंभ किया । इस कार्यशाला में श्री एस.डी.शर्मा, उप-महानिदेशक (अनुसंधान), भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहारादून, सम्मानीय अतिथि, श्री दिनेश रैना, मुख्य महा-प्रबन्धक, राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, शिमला एवं श्री निशांत ठाकुर, संयुक्त सदस्य सचिव, हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण परिषद विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे । इस अवसर पर श्री बी.आर.प्रेमी, उप-महाप्रबन्धक एवं श्री संजीव शर्मा, सहायक महा-प्रबन्धक, राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, शिमला भी उपस्थित रहे ।

कार्यशाला का आरम्भ निदेशक, डॉ. शेर सिंह सामन्त के मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों, विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, अधिकारियों तथा प्रतिभागियों के हार्दिक स्वागत, अभिनंदन एवं कार्यशाला के बारे संक्षिप्त विवरण के साथ हुआ । उन्होंने बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख केंद्र शासित प्रदेशों में वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा हैं तथा इस कार्य में इन राज्यों तथा केंद्र-शासित प्रदेशों के वन विभागों एवं सभी सस्थानों का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है । उन्होंने कार्यशाला के आयोजन हेतु वितीय सहयोग के लिए राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, शिमला के मुख्य महा-प्रबन्धक, श्री दिनेश रैना एवं उनके सहयोगियों का धन्यवाद किया तथा उनकी संस्था द्वारा राष्ट्र निर्माण विशेषकर ग्रामीण उत्थान हेतु प्रायोजित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु भी सराहना की । डॉ. सामंत ने यह आशा वयक्त की कि यह कार्यशाला जागरूकता के साथ-साथ वानिकी गतिविधियों के माध्यम से स्थायी वन प्रबंधन और आजीविका के मुद्दों को हल करने के लिए एक दृष्टिकोण, अनुभव, ज्ञान और प्रतिबद्धताओं को साझा करने एवं कार्य योजना बनाने हेतु सांझा मंच प्रदान करेगी ।

श्री निशांत ठाकुर, संयुक्त सदस्य सचिव, हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण परिषद ने अपने सम्बोधन में बताया कि सतत विकास से हमारा अभिप्राय ऐसे विकास से है, जो हमारी भावी पीढ़ियों को अपनी जरूरतें पूरी करने की योग्यता को प्रभावित किए बिना वर्तमान समय की आवश्यकताएं पूरी करे । भारत विशेषकर हिमालयी राज्यों की अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है तथा दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिए वनों पर निर्भर है, इसलिए उन्होंने वनों के वैज्ञानिक प्रबंधन एवं पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया ।

श्री दिनेश रैना, मुख्य महा-प्रबन्धक, राष्ट्रीय एवं ग्रामीण विकास बैंक, शिमला ने नाबार्ड के कार्यक्षेत्र पर चर्चा करते हुए बताया कि उनकी संस्था देश में कृषि एवं इससे संबन्धित अन्य गतिविधियों को बढ़ावा देती है तथा देश की प्रगति में अहम योगदान दे रही है । इस कार्यशाला पर अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि आज के परिपेक्ष्य में वनों का पारिस्थितिकी तंत्र तथा मानव आजीविका में विशेष महत्व है । वर्तमान में हमारे देश की 88% जनसंख्या ग्रामीण है तथा और ग्रामीण समुदाय दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं जैसे ईंधन, चारा, औषधीय पौधों आदि के लिए जंगलों पर निर्भर हैं । इसलिए यह कार्यशाला वर्तमान परीपेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगी ।

श्री एस.डी. शर्मा, उप-महानिदेशक (अनुसंधान), भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहारादून ने अपने सम्बोधन में देश तथा हिमालयी क्षेत्र में वनों की वर्तमान स्थिति के बारे में आंकड़ों सहित इनके सतत विकास पर बल दिया । उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधन जीवन आधार के रूप में कई लाभ प्रदान करती हैं । लकड़ी, चारा, ईंधन, भोजन, फाइबर, उर्वरक, दवा, आदि के साथ-साथ यह मानव कल्याण और अस्तित्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण है । उन्होंने कहा कि वन जानवरों के लिए आवास और मनुष्यों के लिए आजीविका प्रदान करने के साथ-साथ वानिकी प्रणाली पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा, मिट्टी के कटाव को रोकने और जलवायु परिवर्तन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है । वनों की गुणवत्ता और प्रबंधन इसकी उत्पादकता को निर्धारित करता है और साथ ही वनों पर निर्भर समुदायों की आजीविका के लिए प्राकृतिक वन उत्पादों के प्रवाह को भी निर्धारित करता है । इस प्रकार वानिकी प्रणालियों की गुणवत्ता और समुदायों की आजीविका की स्थिरता के बीच सीधा संबंध है, इसलिए

वानिकी प्रबंधन के साथ-साथ उन्होने वानिकी अनुसंधान की आवश्यकता पर भी बल दिया ताकि देश में वन आवरण को बढ़ाया जा सके ।

मुख्य अतिथि डॉ. सविता, प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं वन बल प्रमुख, हिमाचल प्रदेश ने इस अवसर पर कार्यशाला में भाग ले रहे प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिमालयी पारिस्थितिकी-तंत्र अपने प्राकृतिक, अद्‌वितीय और सामाजिक-आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण जैव-विविधता के लिए जाना जाता है । भारतीय हिमालयी क्षेत्र में विशिष्ट स्थलाकृतिक विविधताएं हैं, जो विभिन्न प्रकार, विविध पहलुओं, आवासों और जलवायु परिस्थितियों के लिए जानी जाती है । हिमालयी वन क्षेत्र समृद्‌ध जैव-विविधता का भंडार हैं जो स्थानीय समुदायों के प्राथमिक आजीविका का स्रोत होने के साथ-साथ जंगली-जानवरों को आवास प्रदान करने के साथ-साथ पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन, मिट्‌टी के कटाव को रोकने और जलवायु परिवर्तन के शमन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । जनसंख्या में वृद्‌धि के कारण वन संसाधनों पर लगातार बढ़ता दबाव प्राकृतिक वन संसाधनों में कमी का कारण बन रहा है । सिमित संसाधनों के साथ ईंधन, चारा, लकड़ी, आदि की बढ़ती मांग को केवल वानिकी हस्तक्षेप से संतुलन बनाकर पूरा किया जा सकता है । डॉ. सविता ने कहा कि उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए यह कार्यशाला बहुत ही महत्वपूर्ण है तथा आशा व्यक्त की कि इस कार्यशाला से प्राप्त होने वाली अनुशंसाएँ नीति-निर्धारकों के लिए अवश्य ही लाभदायक होंगी ।

उद्‌घाटन सत्र उपरांत डॉ. राजेश शर्मा, समूह समन्वयक अनुसंधान ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया । उन्होंने मुख्य अतिथि, सम्मानीय अतिथि, विशिष्ट अतिथियों, विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, अधिकारियों तथा प्रतिभागियों का इस कार्यशाला में भाग लेने हेतु विशेष आभार व्यक्त किया ।

इसके उपरांत कार्यशाला का तकनीकी सत्र आरंभ हुआ तथा तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. शेर सिंह सामन्त एवं डॉ राजेश शर्मा ने की । इस सत्र में जैव विविधता संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, वनवर्धन एवं प्रबंधन, वृक्ष सुधार, औषधीय पौधे, वनों पर आधारित आजीविका, मानव एवं वन्य जीव संघर्ष विषयों पर हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड तथा जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख केंद्र शासित प्रदेशों के 18 वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों तथा वन अधिकारियों ने अपने व्याख्यान दिए । कार्यशाला में दिये गये व्याख्यानों तथा उनपर हुई गहन चर्चा के उपरांत निम्नलिखित सामने आया।

1) जैव-विविधता आकलन एवं पारिस्थितिक आवास मॉडलिंग की आवश्यकता
2) वन संसाधनों के सतत प्रबंधन के लिए प्रोटोकॉल और तकनीक विकसित करने की आवश्यकता
3) वनों को कीटों एवं रोगजनकों से बचाने के लिए प्रभावी प्रबंधन (IPDM) विकसित करने की आवश्यकता
4) आक्रामक प्रजातियों का प्रबंधन
5) उच्च गुणवत्ता के रोपण स्टॉक एवं प्रजनन तकनीक तैयार करने की आवश्यकता
6) वन संसाधनों को वैज्ञानिक प्रबंधन की आवश्यकता
7) अनुवंशिकी एवं वृक्ष सुधार हेतु क्लोनल सीड ऑर्चर्ड एवं सीड ऑर्चर्ड स्थापित करने के साथ उच्च गुणवत्ता के वृक्षों की पहचान की आवश्यकता
8) जलवायु स्मार्ट वानिकी अपनाने की आवश्यकता
9) कृषि-जलवायु क्षेत्र अनुरूप कृषि वानिकी मॉडल विकसित करने की आवश्यकता
10) निम्नकृत वनों व बंजर भूमि को स्थानीय प्रजातियों को लगाकर पुन: स्थापित करना
11)ग्रामीण समुदायों को उच्च मूल्य के औषधीय और सुगंधित पौधों की व्यावसायिक खेती के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता
12) मानव वन्यजीव संघर्षों को कम करने के लिए लैंगिक शिक्षा, पशुधन बीमा योजनाओं के बारे में जागरूकता हेतु गैर-सरकारी संगठनों की सहभागीदारी की आवश्यकता
13) जंगली खाद्य, फलों / मशरूम की पहचान एवं बायोप्रोस्पेक्टिंग की आवश्यकता
14) जंगली खाद्य प्रजातियों के पोषक तत्वों एवं मूल्य संवर्धन में शोध की आवश्यकता
15) ग्रामीण समुदायों के आय वृद्धि एवं रोज़गार हेतु मधुमक्खी-पालन को बढ़ावा देने की आवश्यकता
16) ईंधन के लिए वनों की अंधाधुद कटाई को कम करने के लिए सौर वॉटर हीटर जैसे प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता
17) सभी विभागों एवं स्थानीय समुदायों में तालमेल की आवश्यकता
18) वानिकी से संबन्धित शोध कार्यों के परिणाम आम जन तक पहुंचाने की आवश्यकता

19) वन अधिनियम, क़ानूनों एवं वन उत्पाद बिक्री की प्रक्रिया के बारे में जागरूकता की आवश्यकता

कार्यशाला का अंत समापन सत्र के साथ हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ टी.एन.लखनपाल एवं डॉ एस के जोशी ने की । समापन अवसर पर डॉ स्वर्ण लता ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया । उन्होंने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों, विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, अधिकारियों तथा प्रतिभागियों का इस आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए हार्दिक आभार वयक्त किया । उन्होंने कार्यशाला के लिए वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला, हिमाचल प्रदेश को धन्यवाद दिया तथा कहा कि इस कार्यशाला का आयोजन नाबार्ड के वित्तीय सहयोग, मुख्य, सम्माननीय तथा विशेष अतिथियों, विषय विशेषज्ञ वक्ताओं, विभिन्न सरकारी- गैर सरकारी संस्थाओं एवं हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही संभव हो पाया है ।

कार्यशाला की झलकियां

NABARD
agement and Livelihood
Sponsored by:

Regional Workshop
on
Forestry Research, Sustainable Forest Manager
17th March 2021
Organized by:

NABARD
ement and Livelihood
Sponsored by:
Shimla, H.P.

Regional Worksh
on
Forestry Research, Sustainable Forest Ma
17th March, 2021
Organized by:

Regional Workshop
on
Forestry Research, Sustainable Forest Management and Livelihood
17th March, 2021

NOTICE
Regional Worksh

Himalayan Forest Research Institute,

HFRI

HFRI

मीडिया कवरेज

एच.एफ.आर.आई. 'शिमला में जुड़े हिमालयी क्षेत्रों के वैज्ञानिक'

शिमला : वानिकी अनुसंधान, सतत वन प्रबंधन तथा आजीविका पर आयोजित एकदिवसीय कार्यशाला के दौरान उपस्थित वन विभाग की मुखिया एवं प्रधान मुख्य अरण्यपाल डा. सविता व अन्य।

ट्रांस और उत्तर पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान, सतत वन प्रबंधन तथा आजीविका पर आयोजित कार्यशाला में दिए व्याख्यान

शिमला 17 मार्च (ब्यूरो): एच.एफ.आर.आई. शिमला द्वारा नाबार्ड बैंक शिमला की वित्तीय सहायता से ट्रांस और उत्तर पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान, सतत वन प्रबंधन तथा आजीविका पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें हिमालयी राज्यों हिमाचल, उत्तराखंड तथा केंद्र शासित प्रदेशों जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख के वैज्ञानिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा वन विभागों के 18 वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों तथा वन अधिकारियों ने वानिकी से संबंधित प्रमुख विषयों पर अपने व्याख्यान दिए।

वन विभाग की मुखिया एवं प्रधान मुख्य अरण्यपाल डा. सविता ने बतौर मुख्यातिथि भाग लेते हुए कहा कि हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र अपने प्राकृतिक, अद्वितीय और सामाजिक आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण जैव-विविधता के लिए जाना जाता है। भारतीय हिमालयी क्षेत्र में विशिष्ट स्थलाकृतिक विविधताएं हैं, जो विभिन्न प्रकार, विविध पहलुओं, आवासों और जलवायु परिस्थितियों के लिए जानी जाती हैं।

एच.एफ.आर.आई. के निदेशक डा. शेर सिंह सामंत ने बताया कि संस्थान द्वारा हिमाचल, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश के वन राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का दो-तिहाई हिस्सा हैं और इस क्षेत्र के पर्यावरण और आर्थिक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह वन समृद्ध जैव-विविधता के भंडार हैं और अपनी ग्रामीण आबादी के लिए प्राथमिक आजीविका स्रोत होने के साथ-साथ नाजुक हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ग्रामीण आबादी का अधिकांश भाग जंगलों पर निर्भर करता है। संयुक्त सदस्य हिमकोस्ट निशांत ठाकुर ने बताया कि विकास ऐसा हो, जिससे हमारी भावी पीढ़ियों की जरूरतें पूरी करने की योग्यता को प्रभावित किए बिना वर्तमान समय की आवश्यकताएं पूरी हों। मुख्य महाप्रबंधक नाबार्ड बैंक शिमला दिनेश रैना ने कहा कि आज के परिपेक्ष्य में वन, पारिस्थितिकी तंत्र तथा मानव आजीविका का विशेष महत्व है।

दैनिक भास्कर हिमाचल 19-03-2021

ट्रांस और उत्तर पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान पर चर्चा

ट्रांस और उत्तर पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान पर कार्यशाला में मौजूद अधिकारी।

शिमला | एचएफआरआई द्वारा राष्ट्रीय एवं ग्रामीण विकास बैंक शिमला की वित्तीय सहायता से ट्रांस और उत्तर पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान, सतत वन प्रबंधन और आजीविका पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस दौरान प्रधान अरण्यपाल डॉ. सविता ने कार्यशाला का शुभारंभ किया। एफआरआई देहरादून के उप-महानिदेशक एसडी शर्मा और संयुक्त सदस्य सचिव, हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण परिषद विशिष्ट निशांत ठाकुर अतिथि के रूप में कार्यशाला में उपस्थित रहे। इस दौरान एचएफआरआई के निदेशक डॉ. शेर सिंह सामंत ने बताया कि यह कार्यशाला विभिन्न वानिकी गतिविधियों के माध्यम से स्थाई वन प्रबंधन और आजीविका के मुद्दों को हल करने के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर एक आम दृष्टि, अनुभव, ज्ञान और प्रतिबद्धताओं को साझा करने के लिए कार्य योजना बनाने के लिए सांझा मंच प्रदान करेगी।

ट्रांस हिमालयी क्षेत्रों में सतत वन प्रबंधन पर जोर

राज्य ब्यूरो, शिमला : ट्रांस हिमालयी क्षेत्रों में सतत वन प्रबंधन की जरूरत है। ऐसा इसलिए भी जरूरी है क्योंकि जलवायु परिवर्तन से वन संपदा, जैव विविधता, लोगों की आजीविका पर बड़ा असर हो रहा है। यह बात हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (एचएफआरआइ) शिमला में एक दिवसीय कार्यशाला के दौरान विज्ञानियों ने कही। ये विज्ञानी, शिक्षाविद, वन अधिकारी वर्चुअल माध्यम से जुड़े। कार्यशाला का शुभारंभ पीसीसीएफ डा. सविता ने किया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डा. शेर सिंह सामंत ने कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि वानिकी अनुसंधान की और अधिक आवश्यकता है।